: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI MAHENDRA SHARMA
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

२१वीं सदी की युग चेतना का उद्गम

शान्ति कुञ्ज

ॐ

इक्कीसवीं सदी युग परिवर्तन की प्रभात वेला है। इसमें बहुत कुछ ऐसा होने जा रहा है, जो अब की तुलना में अत्यधिक सुधरा या बदला हुआ होगा। इस महा क्रान्ति स्तर की ज्ञान गंगा का उद्गम शान्ति कुञ्ज बनने जा रहा है। गंगोत्री से निकल कर गंगा महासागर तक पहुँचते पहुँचते सहस्र धाराओं वाली बन जाती है। यह सर्व विदित है। ऐसा ही युगान्तरीय चेतना के साथ भी होने जा रहा है।

स्थान और वातावरण का अपना महत्त्व होता है। उपयुक्त स्थान और वातावरण में सम्पन्न किये गये, कार्य सामान्य स्थानों की तुलना में कहीं अधिक सफल होते हैं। प्राचीन काल में विद्यार्थी, ऋषियों के तत्त्वावधान में चलने वाले गुरुकुलों में पढ़कर, खरे सोने की तरह तपकर निकलते थे। हिमालय के आरण्यकों में साधकों की साधनाएँ सफल होती थीं। तीर्थों की संस्कारित भूमि का अपना पुण्य और महत्त्व है। शान्ति कुञ्ज का निर्माण, विशिष्ट शक्तिशाली-संस्कारयुक्त भूमि खोजकर, उस पर किया गया है और प्रखर प्रयत्नों से उसे ऊर्जा पुंज बनाया गया है।

तीर्थों की स्थापना के पीछे भी कोई न कोई महत्त्वपूर्ण, दीर्घ-कालीन घटनाक्रम जुड़ा हुआ होता है। वहाँ ऋषियों की तपस्थली, अवतारों, देवदूत, महामानवों की जन्म स्थली रही है। महान घटनाओं के जो संस्कार उस भूमि से जुड़ जाते हैं, वे अपना सूक्ष्म प्रभाव लम्बी अवधि तक बनाये रहते हैं। उनका लाभ, सम्पर्क में आने वाले को, पात्रता के अनुरूप, न्यूनाधिक मात्रा में मिलता रहता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं। पवित्र स्थानों के महत्त्व के पीछे ऐसी ही विशेषतायें जुड़ी रहती हैं। मथुरा, अयोध्या, काशी, कपिलवस्तु, बोधगया, सारनाथ, यरुशलम आदि स्थानों की महत्ता, उनके साथ किसी समय देवदूतों के जुड़े रहने के कारण ही बनी या बढ़ी है। चार धाम, द्वादश ज्योतिर्लिंग, सप्त पुरियाँ, महाशक्ति पीठें, दिव्य सरोवर, पवित्र संगम, सरिताओं के उद्गम इसी लिए अधिक पवित्र माने गये, कि वहाँ से दिव्य क्षमताओं का शुभारम्भ हुआ।

भूमि की यह विशेषता भौतिक क्षेत्र में भी अनुभव होती है। सेनेटोरियम में भर्ती होकर रोगी इसलिए जल्दी लाभ प्राप्त करता है कि वहाँ मात्र औषधियों का ही नहीं, आरोग्य वर्धक वातावरण का अतिरिक्त लाभ मिलता है। नागपुर के संतरे, भुसावल के केले, मैसूर का चन्दन, बलसाड़ के चीकू आदि अपनी विशेषता लिए होते हैं। उन पौधों को अन्यत्र लगा कर उस स्तर का उत्पादन नहीं पाया जा सकता।

अफ्रीका के निवासी काले रंग, चौडी नाक और मोटे होठ वाले होते हैं। मंगोलियन नस्ल वालों का रंग पीला, कद ठिगना, आँखें छोटी, नाक मोटी होती है। काँगो में बौनी नस्ल के लोग हैं। एशिया के अजरबेजान व कजाकिस्तान क्षेत्र में संसार भर से सब से अधिक दीर्घजीवी पाये जाते हैं। यूरोपियन लोग गोरे और पठान तगड़े होते हैं। यह सब भूमि एवं जलवायु का प्रभाव है। स्थानों की इस विशिष्टता से इन्कार नही किया जा सकता।

मिश्र के पिरामिड भूमध्य रेखा के प्रभाव क्षेत्र में किसी विशेष आधार पर ही बनाये गये हैं। कोणार्क के सूर्य मन्दिर पर संसार भर के वैज्ञानिक सूर्य ग्रहण के विशेष अध्ययन के लिए आते हैं। संसार का अधिकांश सोना दक्षिण अफ्रीका में निकलता है। खनिज तेलों की जैसी भरमार अरब देशों में है, वैसी और कहीं नहीं है। गर्म जल के फव्वारे न्यूजीलैण्ड की अपनी विशेषता हैं। बरमूडा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

त्रिकोण के क्षेत्र में जलयान–वायुयान आदि लुप्त होते रहते हैं। कहा जाता है कि वह क्षेत्र अन्तरिक्ष के किसी अन्धगर्त [ब्लैक होल] से जुड़ा हुआ हैं। न्यूट्रॉन कणों का भण्डार कोलार की सोने की खदान में प्रमुखता से हैं। वायु का जैसा दबाव हॉलैण्ड में है वैसा कहीं नहीं हैं। पवन चक्कियाँ उस क्षेत्र में सर्वाधिक सफल हुई हैं। उत्तरी एवम् दक्षिणी ध्रुव क्षेत्रों की अपनी अनेक विशेषताएँ हैं, जो अन्यत्र नहीं पायी जाती। पृथ्वी की धुरी वाला केन्द्र इतना संवेदनशील है, कि वहाँ कसकर एक घूँसा मार दिया जाय तो पृथ्वी की भ्रमणशीलता और कक्षा में भारी परिवर्तन आ सकता है।

अन्तरिक्ष के अध्ययन के लिए शक्तिशाली दुर्बीनें और वेधशालाएँ किन्हीं विशेष स्थानों पर ही लगायी जाती हैं। उपग्रह छोड़ने के लिए भी स्थानों का चयन किया जाता हैं। वही प्रयत्न जहाँ-तहाँ किए जायें तो वैसे परिणाम प्राप्त नहीं किए जा सकते।

आध्यात्मिक संदर्भ में भी स्थान तथा व्यक्ति विशेष के सान्निध्य का अपना ही महत्त्व है। लवकुश का, चक्रवर्ती भरत का, परशुराम का लालन-पालन और प्रशिक्षण किसी अतिरिक्त शक्तिशाली वातावरण में किया गया था। राम-लक्ष्मण ने भी वे दिव्य विद्याएँ, ऋषि विश्वामित्र के आश्रम में रहकर ही प्राप्त की थीं, जिनके कारण वे लंका दमन और सतयुगी राम राज्य की स्थापना में सफल हुए थे।

गंगा की गोद, हिमालय की छाया सप्तऋषियों की तपोभूमि होने के कारण, शान्ति कुञ्ज के स्थान की विशेषता को आध्यात्मिक त्रिवेणी संगम कहा जा सकता है। स्थापना के अवसर पर चौबीस लाख के चौबीस महापुरश्चरणों का यहाँ आयोजन किया गया। ६५ वर्ष से जलने वाली अखण्ड ज्योति की यहाँ अनुपम स्थापना है। नौ कुण्डों की यज्ञशाला में अनुष्ठानी साधकों द्वारा हजारों आहुतियों का यज्ञ होता हैं। स्थानीय निवासी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तथा बाहर के आगन्तुक सभी अपनी साधना बड़ी मात्रा में करते हैं, जो प्रतिदिन कितने ही लक्ष मंत्र जप के समकक्ष हो जाती है। यह प्रत्यक्ष है--परोक्ष वह हैं, जिसमें हिमालय की देवात्मा सप्तऋषियों का प्रतीक पूजन, अदृश्य सत्ताओं को आकर्षित करता रहता हैं। वरिष्ट तपस्थियों की तपश्चर्या अपना विशेष प्रभाव उत्पन्न करती है।

इक्कीसवीं सदी के साथ उज्ज्वल भविष्य का निर्माण जुड़ा हुआ हैं। बीसवीं सदी के अन्तिम बारह वर्ष सन् १९८९ से २,००० तक युग संधि के हैं। इन बारह वर्षों में युग संधि महापुरश्चरण की प्रचण्ड आध्यात्मिक साधना सतत् चलेगी। उसका उद्गम शान्ति कुञ्ज है और विस्तार क्षेत्र समस्त भारत तथा समग्र संसार हैं। उसमें सम्मिलित होने के लिए शान्ति कुञ्ज के किसी सत्र में आना अधिक हितकर हैं। अपने घर रह कर, साप्ताहिक साधना-सत्संग के रूप में उसका स्थानीय उपक्रम चलाया जा सकता हैं।

युग संधि महापुरश्चरण की शाखाएँ प्रज्ञा मण्डलों के रूप में सभी जगह स्थापित हुई है। उनमें साप्ताहिक सामूहिक उपासना और सत्संग का प्रचलन अनिवार्य रूप से अपनाया जा रहा हैं। इसके दो प्रयोजन हैं— १. समान विचार वालों के नियमित रूप से मिल जुल कर बैठने से देव संगठन परिपक्व होगा। २. परस्पर नियमित विचार विनिमय के आधार पर विचार क्रान्ति का पथ प्रशस्त होगा। एक से पाँच, पाँच से पच्चीस वाली विस्तार प्रक्रिया चलेगी। इसी आधार पर मनुष्यों में देवत्व की अभिवृद्धि होगी। प्रज्ञा मण्डल यही कर रहे हैं। इनके विस्तार का क्रम वर्तमान गति की दर से चलता रहे, तो वह दिन दूर नहीं, जब देशों, समाजों, भाषाओं और वर्गों की सीमा का उल्लंघन करते हुए, संसार के कोने-कोने तक, हर व्यक्ति तक युग चेतना का आलोक विस्तार सम्भव होगा। युग परिवर्तन का अरुणोदय, अन्ध युग की तमिस्रा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

को पदच्युत करके रहेगा। इन दिनों बहुमत अवाञ्छनीयता का है, पर वह दिन दूर नहीं जब उमड़ती हुई घटाएँ, अभिनव हरीतिमा का दृश्य सर्वत्र प्रस्तुत करके रहेंगी। देवत्व सदा असंगठित होने के कारण ही हारता रहा है। जब उसने अपनी संगठित शक्ति विकसित की है, तो संघ शक्ति की दुर्गा उन्हें विजयी बनाने के लिए दौड़ती चली आयी है और उनकी गरिमा को पुनः यथा स्थान प्रतिष्ठापित करके रही है।

जहाँ प्रज्ञा मण्डल बन चुके हैं, वहाँ दो घण्टे की बाल संस्कार शालाएँ चलाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। इस माध्यम से छात्रों को और अभिभावकों को प्रतिभा परिष्कार के महान आन्दोलन के साथ जोड़ा जा सकेगा।

युग संधि महा पुरश्चरण के साथ एक और संकल्प जोड़ा गया है, वह है युग देवता के चरणों में एक लाख ऐसे सृजन शिल्पी समर्पित करना, जो इस महान परिवर्तन में अपनी महती भूमिका निभा सकें। उनका प्रतिभावान होना आवश्यक है। महान कार्य, महामानवों से ही बन पड़ते हैं। इसके लिए प्रतिभा, प्रखरता और प्रामाणिकता का समुचित समावेश आवश्यक हैं। युग संधि पुरश्चरण के साथ आदर्शवादी साहसिकता से भरी पूरी प्रतिभाओं का उत्पादन भी जोड़कर रखा गया है।

शान्ति कुञ्ज में इन दिनों नौ-नौ दिन के और एक-एक माह के सत्र चल रहे हैं। इस अवधि में जहाँ पुरश्चरण में भाग लेने का परमार्थ बन पड़ता है, वहाँ निजी व्यक्तित्व का परिष्कार भी अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। इसके लिए जीवन कला का, संजीवनी विद्या का प्रशिक्षण दिया और अभ्यास कराया जाता है। अब तक इस प्रक्रिया के समुचित सत्परिणाम सामने आते रहे हैं।

कप्तान का पद और नेतृत्व का दायित्व जिन्हें सम्हालना पड़ता है, उन्हें सामान्य सैनिक की अपेक्षा अधिक कौशल, मनोबल,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनुभव एवं अभ्यास अर्जित करना पड़ता है । युग नेतृत्व संभालने वालों के लिए भी यही प्रक्रिया अपनाने की आवश्यकता पड़ेगी । लोहा कितना भी अच्छा क्यों न हो, तीखी तलवार का रूप देने के लिए, उसे गलाने ढालने और धार धरने की प्रक्रिया में डालने पड़ता हैं । इसी तरह का उपक्रम युग सृजेताओं के लिए भी अपनाना होगा । परिवर्तन की विषम वेला में तो, ऐसे प्रतिभावानों को बड़ी संख्या में विनिर्मित करना बहुत आवश्यक है ।

शान्ति कुञ्ज की शिक्षण श्रृंखला का प्रमुख प्रयोजन यही हैं– प्रतिभावानों का निर्माण–प्रशिक्षण, उनके माध्यम से देव प्रकृति के वरिष्ठों का संगठन और जन जन में व्याप्त उल्टे चिन्तन एवं क्रिया-कलापों को सुधारने के लिए लोक मानस का परिष्कार, मुख्य उद्देश्य है । जन जागरण की पुण्य प्रक्रिया में दीप यज्ञों एवं संगीत द्वारा प्रेरणा संचार की भूमिका असाधारण सिद्ध हुई है । संस्कार प्रक्रिया ने घर-घर में प्रवेश किया है । कुटीर उद्योगों के विस्तार से उद्योगी वृत्ति का विकास तथा पर्व आयोजनों के माध्यम से सामूहिक चेतना का जागरण संभव हो रहा है । ऐसे-ऐसे अनेकों प्रयोजन शान्ति कुञ्ज की सत्र श्रृंखला के साथ समाविष्ट हैं ।

सत्र साधना के साथ जड़े हुए युग संधि पुरश्चरण के माध्यम से अदृश्य वातावरण के संशोधन की संभावना भी जुड़ी है । व्यक्ति वातावरण बनाते हैं और वातावरण व्यक्तित्वों का सृजन करता हैं । दोनों के बीच अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है । यह प्रक्रिया सही रीति से चल पड़े, तो उसके सत्परिणाम देखने को मिलेंगे ही । प्रवाह बदलेगा, तो साथ ही क्रिया कलापों का स्वरूप भी बदलेगा ही ।

जो इन सत्रों में सम्मिलित हों, उनका यह पवित्र कर्तव्य है कि अपने सम्पर्क क्षेत्र के अधिकाधिक लोगों को इन सत्रों में सम्मिलित होने के लिए शान्ति कुञ्ज भेजने का प्रयत्न करें । इससे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्षेत्र में नयी लोक सेवी प्रतिभाओं का संवर्धन होगा और उनके सहयोग से वहाँ नये सिरे से नये जीवन का संचार होगा।

जिनका शान्ति कुञ्ज से पूर्व परिचय है, उनका कर्तव्य है कि समय निकाल कर यहाँ बार-बार आते रहें। इस आधार पर उन्हें बार-बार बैट्री चार्ज करने, परिस्थितियों के अनुरूप उपयोगी मार्ग दर्शन प्राप्त करने का अवसर मिलता रहेगा।

जिनको दूरवर्ती या उथली जानकारी है, वे अपने अनुभव एवं विश्वास में अभिवृद्धि के लिए अधिक निकट आने का प्रयत्न करें। नौ दिन के एक सत्र में सम्मिलित होने का समय निकालें और देखें कि वे उत्कर्ष में सहायक हो सकने वाले, किसी सशक्त तंत्र के साथ अपने को जोड़ने का सुयोग पा सके हैं।

जिन्हें देव संस्कृति पर श्रद्धा है, वे विभिन्न संस्कार कराने के निमित्त यहाँ पहुँचें और प्रभावोत्पादक प्रकाश प्राप्त करें। शान्ति कुञ्ज में पुंसवन, नामकरण, मुन्डन, अन्नप्राशन, विद्यारम्भ आदि संस्कार कराने भी लोग आते रहते हैं। यज्ञोपवीत एवं वानप्रस्थ संस्कारों का बहुत प्रभावशाली क्रम चलता रहता है। जन्म दिवसोत्सव एवं विवाह दिवसोत्सवों को भी संस्कार रूप में मनाया जाता है। श्राद्ध-तर्पण की भी समुचित व्यवस्था है। इस ऋषिप्रणीत सुविधा का लाभ कोई भी प्राप्त कर सकता है।

दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन में जिन्हें उत्साह है, वे अपने प्रभाव क्षेत्र में सभी विवाहों को बिना धूमधाम के, अत्यंत सादगी के साथ संपन्न कराने का निश्चय करें। यह सुयोग अपने स्थान पर न बन पड़े तो शान्ति कुञ्ज आकर उन्हें सम्पन्न कराने का समय निश्चित करें।

सामूहिक उत्सवों आयोजनों में जिन्हें उत्साह है, वे अपने यहाँ दीप यज्ञ समारोह की योजना बनायें और उसे शान्ति कुञ्ज के सहयोग से अधिक प्रभावशाली बनायें।

जो इतना भी न कर सकें, वे अपनी भौतिक और आत्मिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समस्याओं के सम्बन्ध में जबाबी पत्र भेजकर, आवश्यक प्रकाश परामर्श प्राप्त करते रहें। मिशन की पत्रिकाओं और पुस्तिकाओं के स्वाध्याय द्वारा, विचार सम्पर्क जीवन्त बनाये रखें।

घर बैठे युग संधि पुरश्चरण में भागीदार बनने के लिए मानसिक ध्यान धारणा की न्यूनतम-सरलतम प्रक्रिया निर्धारित की गयी है, जो इस प्रकार है:-

प्रातः काल आँख खोलते ही पाँच मिनट की यह ध्यान-धारणा सम्पन्न करें। क्रम है- भावना द्वारा शान्ति कुञ्ज पहुँचना, निकटवर्ती गंगा की धार में डुबकी लगाना, शान्ति कुञ्ज पहुँच कर गायत्री मंदिर एवं यज्ञशाला की परिक्रमा करना, अखण्ड दीप के सामने बैठ कर कम से कम दस बार गायत्री मंत्र का जप करना, माताजी के पास पहुँच कर भक्ति और आचार्य वर के पास पहुँचकर शक्ति का अनुदान प्राप्त करना, इसके उपरान्त अपने स्थान पर वापिस लौट आना। यह पाँच मिनट की मानसिक साधना, उद्गम स्रोत के साथ साधक का घनिष्ट भाव उत्पन्न करती है, बैट्री चार्ज जैसा लाभ पहुँचाती है और युग संधि महापुरश्चरण में भागीदार बनने का अवसर प्रदान करती है।

अवे में कच्ची मिट्टी के बर्तन पक कर मजबूत होते हैं। भट्ठे में ईंट पकती हैं। गरम माहौल में रख देने से कच्चे केले और कच्चे आम कुछ ही समय में पकते देखे जाते हैं। इसी प्रकार प्राणवान वातावरण में रह कर किए गये अनुष्ठान - प्राण ऊर्जा से भर देने वाले प्रयोग चमत्कारी लाभ प्रदान करते हैं। ऐसे ही लाभ शान्ति कुञ्ज के सान्निध्य में पाये जा सकते हैं। अब तक की उपलब्धियाँ इसकी साक्षी है।

मुद्रक:— युगान्तर चेतना प्रेस, शान्ति कुञ्ज हरिद्वार।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org